

**बांध परियोजनाओं से उद्यानिकी फसल प्रारूप में परिवर्तन का अध्ययन  
(खरगोन जिले के संदर्भ में भौगोलिक अध्ययन)**

**अर्जुन रन्धावे**

सहायक प्राध्यापक भूगोल,  
 प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ  
 एक्सीलेंस, शहीद भीमा नायक  
 शासकीय स्नातकोत्तर  
 महाविद्यालय, बडवानी (म.प्र.)  
 डॉ. दिनेश कुमार पाटीदार  
 सहायक प्राध्यापक भूगोल,  
 विभागाध्यक्ष - भूगोल विभाग  
 शासकीय नवीन आदर्श  
 महाविद्यालय बडवानी (म.प्र.)

Paper Received date

05/12/2025

Paper date Publishing Date

10/12/2025

DOI

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18145037>



**सारांश**

उद्यानिकी कृषि में कृषक अपनी भूमि का अधिकतम उपयोग कर सकता हैं। यह एक बहु आयामी कृषि हैं। जिसके अन्तर्गत फलों की कृषि, फुलों की कृषि, मसालों की कृषि और औषधिय पौधों तथा सजावटी पौधों की कृषि की जाती हैं। जिससे एक ही समय विशेष में एक साथ एक से अधिक फसल का उत्पादन किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पेपर में खरगोन जिले की बांध सिंचाई परियोजनाओं द्वारा उद्यानिकी फसलों के प्रारूप में होने वाले परिवर्तन का विश्लेषण किया गया हैं। बांध सिंचाई साधनों के विकास के कारण जिले के शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के अलावा नदी घाटी क्षेत्रों में भी फसल प्रारूप में परिवर्तन पाया गया हैं। इन भागों में वर्षा पर निर्भरता कम कर कृत्रिम रूप से जलापूर्ति सुनिश्चित की जा रही हैं। जिससे खरीफ, रबी और जायद की फसल प्रारूप में व्यापक परिवर्तन हुआ हैं। परम्परागत और व्यावसायिक कृषि लगातार उद्यानिकी कृषि में परिवर्तित हो रही हैं। जिले में फलों की कृषि में रिक्त स्थान में अन्य फसलों का उत्पादन कर मृदा के पोषक तत्वों का कुशल उपयोग किया जा रहा हैं।

कि-वर्ड – उद्यानिकी कृषि, सिंचाई, पर्यावरण संरक्षण, फसल प्रारूप।

प्रस्तावना :

खरगोन जिला पश्चिमी मध्य प्रदेश में स्थित आदिवासी बाहुल जिला हैं। यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में संगग्न हैं। जिले में विगत दशकों में नर्मदा घाटी विकास परियोजना के क्रियान्वयन के तहत जिले में नर्मदा और उसकी सहायक नदियों पर अनेक बांध बनाए गये तथा बहुउद्देशिय परियोजनाओं का निर्माण किया गया। जिनसे सिंचाई, मत्स्य पालन, जब पर्यटन और विद्युत उत्पादन का कार्य किया जा रहा हैं। वृहद स्तर की परियोजनाओं में शामित्र इंदिरा सागर परियोजना, आंकारेश्वर परियोजना प्रमुख हैं। इसी प्रकार छोटी परियोजनाओं में अपरवेदा परियोजना तथा देजना देवाडा बांध परियोजना, अन्य बांध परियोजनाओं का निर्माण किया गया है। इन परियोजनाओं के निर्माण से जिले के 626 ग्रामों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से 133980 हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचित हुई हैं। जिससे व्यापक पैमाने पर कृषि पारिस्थितिकी और पर्यावरण में परिवर्तन हुआ हैं। सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के कारण जिले में उद्यानिकी कृषि प्रारूप में भी व्यापक परिवर्तन हुआ हैं।

साहित्य समीक्षा वर्तमान में विषय से सम्बंधीत साहित्य समीक्षा हेतु हमने विषय को समझने और बेहतर मार्गदर्शन हेतु साहित्य का अध्ययन किया हैं -

1. चौधरी, एन. एवं अन्य (2025): अपनी पुस्तक 'हार्टिकल्चर एंड इकोनॉमिक ग्रोथ (जया प्रकाशन हाउस) में बेखक ने संरक्षित खेती से खुले खेतों की दक्षता 65 प्रतिशत की वृद्धि का उल्लेख किया हैं। तुलना में जब उपयोग की
2. सिंह, जो (2024) 'बेसिक हार्टिकल्चर (कल्याणी प्रकाशन) के नवीनतम संस्करण लँ सूक्ष्म सिंचाई को अपनाने से उर्वरकों की खपत में 30 प्रतिशत की कमी का जीन किया हैं ।
3. चट्टा, के. एल. (2023) : 'हैंडबुक ऑफ हॉर्टिकल्चर' (आईसीएआर) में बताया हैं कि जलवायु स्मार्ट बागवानी तकनीकों से सूखे की स्थिति में भी बेहतर उत्पादन स्थिरता को 20 प्रतिशत तक सुधारा जा सकता हैं।



## International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

### अध्ययन क्षेत्र –

शोध क्षेत्र के लिये मध्यप्रदेश के पश्चिम में स्थित जिला प्रशासनिक इकाई खरगोन का चयन किया गया है। यह क्षेत्र 21°22' से 22° 25' उत्तरी अक्षांश और 74° 25' से 76°14' पूर्वी देशांतर के मध्यम 8030 वर्ग किलोमीटर में विस्तारित हैं। सतपुड़ा पर्व श्रेणी और नर्मदा नदी घाटी में स्थित यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में विगत वर्षों में सिंचाई साधनों के विकास के कारण न केवल आदिवासी अपितु समस्त कृषक समूदाय के जीवन स्तर से सुधार हुआ। इस क्षेत्र में वर्तमान में कृषि भू-दृश्य में व्यापक परिवर्तन होने से भौगोलिक दृष्टि से शोध विषय के अध्ययन क्षेत्र के रूप में अत्यंत प्रासंगिक क्षेत्र हैं।

### उद्देश्य –

शोध का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र खरगोन जिले में उद्यानिकी फसल प्रारूप का स्थानिक कालिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत पारस्परिक फसलों के उद्यानिकी फसलों में हुए रूपांतरण की दर ज्ञात करना तथा भौगोलिक विस्तार का मात्रात्मक आकलन करना शामिल हैं।

### शोध प्रविधि -

शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन अनुसूचि एवं प्रश्नावली विधि द्वारा साक्षात्कार और अवलोकन के माध्यम से सर्वेक्षण द्वारा किया गया। सोद्देश्य प्रतिचयन विधि द्वारा सिंचित क्षेत्र वाली प्रत्येक तहसील से ग्रामों का चयन कर कृषक परिवार का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण किया गया। संकलित आंकड़ों को विसरण एवं विभिन्न सांख्यिकीय विधियों जिनमें माध्य द्वारा औसत मान ज्ञात करने आदि में प्रयोग किया गया।

### उद्यानिकी फसल प्रारूप में परिवर्तन का विश्लेषण –

खरगोन जिले की बांध सिंचाई परियोजनाओं के सिंचाई नियंत्रण क्षेत्र में विभिन्न चरणों में उद्यानिकी फसल प्रारूप में परिवर्तन हुआ है। बांध परियोजनाओं के निर्माण से पूर्व जिले में परम्परागत कृषि एवं व्यावसायिक



## International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कृषि अधिक क्षेत्र में की जाती थी। परम्परागत कृषि के तहत मोटे अनाज में मक्का सर्वाधिक 15 प्रतिशत क्षेत्र तथा तीलहन फसलों में सोयाबीन 20 प्रतिशत क्षेत्र और व्यावसायिक कृषि में नगदी फसल के रूप में कपास का सर्वाधिक उत्पादन 41 प्रतिशत क्षेत्र में किया गया। इसी प्रकार जिले में उद्यानिकी कृषि के अन्तर्गत विभिन्न रूपों में फलों, फुलों, सब्जियों और मसालों तथा औषधीय पौधों, सजावटी पौधों की कृषि कुल 20120 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती थी। इस दौरान जिले में सिंचाई के सीमित साधन उपलब्ध थे। जिले की अधिकांश उद्यानिकी कृषि वर्षा आधारित होने से खरीफ ऋतु में ही अधिक कृषि की जाती थी। शेष समय में सीमित सिंचित साधनों की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में ही विस्तार रहा।

बांध सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण से जिले में सिंचाई साधनों के विकास के कारण कृषकों का आकर्षण उद्यानिकी फसलों और व्यावसायिक फसलों की ओर अधिक बढ़ने लगा है। त्वरीत सिंचाई प्रणाली के विकास से शस्य गहनता में बदलाव एवं लाभ दायक फसलों के चयन हेतु अनेक विकल्प उपलब्ध होने लगे। जिससे किसान परम्परागत कम लाभ प्रदान करने वाली कृषि से उद्यानिकी कृषि की ओर अधिक आकर्षित होने लगे। वर्तमान में जिले में कुल 72609 हेक्टेयर क्षेत्र में उद्यानिकी कृषि की जा रही है। जो कुल 72.8 प्रतिशत की वृद्धि को प्रकट करता है। नर्मदा घाटी की उपजाऊ भूमि में कपास की खेती का स्थान केले की खेती की ने ले लिया है। इसी प्रकार शुष्क और अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में अमरुद और आम के विस्तार हुआ है। साथ मिर्च की कृषि व्यापक पैमाने पर की जा रही है। जिससे न केवल प्रदेश में अपितु देश में भी जिले की पहचान हुई है। जिले के कृषक व्यावसायिक कृषि में कपास के स्थान पर उद्यानिकी कृषि की ओर उन्मुख हो रहे हैं। यह उद्यानिकी कृषि के प्रारूप में परिवर्ती हो रही है।

धरातलीय विविधताओं से युक्त क्षेत्र में भी उद्यानिकी कृषि का विस्तार हुआ है। यहां उद्यानिकी की विविध रूपों में कृषि की जाती है। फलोत्पादन और सब्जी उत्पादन प्रमुख उद्यानिकी कृषि है। क्षेत्र विस्तार के कारण कृषकों की आय में वृद्धि दर्ज की गयी है। जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है। साथ ही मृदा संरक्षण और पर्यावरण सुरक्षा को सुनिश्चित करने में मिल का पत्थर

साबित हुआ है। इस प्रकार उद्यानिकी अपने बहु आयामी होने और बहुउद्देश्यिक कृषि होने को चरितार्थ किया है। क्षेत्र में निरक्षरता और भौगोलिक अलगाव के कारण नवीन तकनीकी ज्ञान की कमी एक प्रमुख चुनौति है। जिसे व्यापक प्रशिक्षण और जागरूकता द्वारा पुरा किया जा सकता है। जिले में न केवल निर्माणाधीन सिंचाई साधनों के पूर्ण होने अपितु जागरूकता बढ़ने पर उद्यानिकी कृषि के क्षेत्र विस्तार और उत्पादन में व्यापक वृद्धि की सम्भावना है।

**निष्कर्ष -**

नर्मदा घाटी विकास परियोजना के तहत खरगोन जिले में नर्मदा और उसकी सहायक नदियों पर निर्मित बांध परियोजनाओं ने सिंचाई सुविधाओं का विस्तार कर जिले की उद्यानिकी कृषि प्रारूप में व्यापक परिवर्तन किया है। जिले की परम्परागत कृषि को व्यावसायिक कृषि और फिर उद्यानिकी कृषि के रूप में परिवर्तित किया है। क्षेत्रफल में कुल 72.28 प्रतिशत वृद्धि निकट भविष्य में ओर अधिक बढ़ने की सम्भावना को प्रकट करता है। वर्तमान यह अनेक कृषकों की आमदनी का प्रमुख स्रोत के रूप में स्थापित हो चुका है। जिले की उद्यानिकी फसलों में सबसे अधिक मात्रा में उत्पादित होने वाली फसलों में मिर्च फसल सर्वप्रमुख है। उद्यानिकी की ओर कृषकों का यह आकर्षण अंचल के उज्ज्वल भविष्य और आत्मनिर्भर कृषि की ओर निर्णायक संकेत है।

**संदर्भ ग्रंथ -**

1. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय। (2010)। *जिला सांख्यिकी पुस्तिका*. जिला खरगोन। मध्य प्रदेश सरकार।
2. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय। (2025)। जिला खरगोन। मध्य प्रदेश सरकार। *प्रमुख सांख्यिकीय आंकड़े*। <https://des.mp.gov.in>.
3. उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, मध्य प्रदेश।(2010)। *सांख्यिकी आंकड़े*। <https://mphorticulture.gov.in>.
4. किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग <https://mpkrishi.mp.gov.in>.



## International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

5. चढडा, के.एल. (संपादक). (2023) *हैंडबुक ऑफ हॉर्टिकल्चर* (खंड 1 और 2 द्वितीय संशोधित संस्करण). भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद. ICAR प्रकाशन ।
6. राज, जे. (2024). *हॉर्टिकल्चर* (7वां संशोधित संस्करण). कल्याणी प्रकाशन
7. शर्मा, आर.आर. एवं कृष्णा, एच. (2024). *पोस्ट-हार्वेस्ट मैनेजमेंट एंड वैल्यू एडिशन ऑफ फ्रुट्स एंड वेजिटेबल्स*. दया पब्लिशिंग हाउस
8. सिंह, डी. (2023). *वेजिटेबल साइंस एंड टेक्नोलॉजी*. एग्रोबियोस (इंडिया)